इलाही शरबत

ilāhī sharbat

Divine Draught

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 4]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage of J. Kemp and R. Gunther https://freebibleimages.org/illustrations/ls-jesus-wedding/; OpenClipart-Vectors https://pixabay.com/images/id-1293468/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

मै : अल-मसीह का निशान 1

मै : बहाली और रिश्ते का निशान 4

मरियम बीबी का मक़सद 4

जो कुछ वह तुमको बताए 5

शरीअत का पानी या मसीह की इलाही शरबत? 6

इंजील, यूहन्ना 2:1-12 8

एक दिन एक शादी हुई। गाँव का नाम क़ाना था। ईसा मसीह की माँ वहाँ गई, और उस्ताद को भी शागिर्दों समेत दावत दी गई। उस ज़माने में शादी आम तौर पर 7 दिन मनाई जाती थी। ज़ाहिर है कि इसके लिए खाने-पीने का बहुत माल दरकार था।

अचानक मरियम बीबी ईसा मसीह के पास आई। वह घबराई हुई थी। उसने कहा, “उनके पास मै नहीं रही।”

क्या? मै ख़त्म है? हाय, हाय! खाने-पीने की चीज़ों की कमी हो तो शादी करानेवालों का मुँह काला हो जाएगा। ऐसे मामलों के बाइस तलाक़ तक दी गई है।

मै : अल-मसीह का निशान

► **लेकिन मै है क्या?**

मै को हिंदी में हाला और इंग्लिश में वाइन कहा जाता है। अंगूर का रस गलते गलते मै में बदल जाता है। इस तरीक़े से अंगूर का रस देरपा हो जाता है। तब वह ख़राब नहीं हो जाता। ईसा मसीह के ज़माने में मै रोज़ाना खाने के साथ ही पी जाती थी, हालाँकि उसे

पानी से मिलाया जाता था। जो मै कही जाती थी उसमें हक़ीक़त में सिर्फ़ एक चौथाई या ज़्यादा से ज़्यादा एक तिहाई मै हुआ करती थी। मतलब है कि नशे में आने के लिए बहुत ज़्यादा पीना पड़ता था।

दीने-इस्लाम में शराब मना है जबकि तौरेत और इंजील इनसान की अपनी ज़िम्मेदारी पर ज़ोर देती है, कि वह अक़्ल से काम ले। हाँ, कलाम में बार बार फ़रमाया गया है कि इनसान न नशे में पड़ जाए न नशाबाज़ बन जाए। यों अक़्ल हमें बताती है कि हम हर क़िस्म की शराब से कतराएँ। जो शराब के आदी बन जाए वह न सिर्फ़ अपने लिए बल्कि दूसरों के लिए भी ख़तरे का बाइस बन जाता है। कितने लातादाद घर शराब की वजह से बरबाद हो गए हैं। कितने अनगिनत लोग शराब के बाइस ट्रैफ़िक के हादसों में उलझकर मर गए हैं।

► **तो यह किस तरह मुमकिन है कि कलाम हमें इस जगह पर मै पीने पर उभारना चाहता है?**

यह नामुमकिन है!

► **तो फिर मै का यह वाक़िया क्यों पेश किया गया है? कलाम हमें क्या सिखाना चाहता है?**

यह समझने के लिए हमें कलाम की गहराइयों में जाना पड़ेगा। बहुत सदियों पहले ख़ुदा के पैग़ंबरों ने पेशगोई की थी कि एक वक़्त आएगा जब ख़ुदा न सिर्फ़ इसराईल बल्कि पूरी दुनिया को नजात

देगा। यह ज़माना अल-मसीह की आमद से शुरू हो जाएगा। तब वह एक ज़ियाफ़त करेगा जिसमें बेहतरीन मै और लज़ीज़तरीन खाने की कसरत होगी। यों यसायाह नबी फ़रमाता है,

> यहीं कोहे-सिय्यून पर रब्बुल-अफ़वाज तमाम अक़-वाम की ज़बरदस्त ज़ियाफ़त करेगा। बेहतरीन क़ि-स्म की क़दीम और साफ़-शफ़्फ़ाफ़ मै पी जाएगी, उम्दा और लज़ीज़तरीन खाना खाया जाएगा।
> इसी पहाड़ पर वह तमाम उम्मतों पर का निक़ाब उतारेगा और तमाम अक़वाम पर का परदा हटा देगा।
> मौत इलाही फ़तह का लुक़्मा होकर अबद तक नेस्तो-नाबूद रहेगी।
> तब रब क़ादिरे-मुतलक़ हर चेहरे के आँसू पोंछकर तमाम दुनिया में से अपनी क़ौम की रुसवाई दूर करेगा। रब ही ने यह सब कुछ फ़रमाया है।
> उस दिन लोग कहेंगे, “यही हमारा ख़ुदा है जिसकी नजात के इंतज़ार में हम रहे। यही है रब जिससे हम उम्मीद रखते रहे। आओ, हम शादियाना बजाकर उसकी नजात की ख़ुशी मनाएँ।”
> (यसायाह 25:6-9)

मै : बहाली और रिश्ते का निशान

तमाम क़ौमें यह पीकर ख़ुशी मनाएँगी। क्योंकि वह ख़ुदा के फ़रज़ंद बनकर नजात पाएँगी। जो परदा इनसान और ख़ुदा के दरमियान पड़ा है वह हटा दिया जाएगा। और यह रिश्ता सबको ज़ाहिर हो जाएगा।

► **किस तरह?**

इसमें कि ख़ुदा उनकी ज़बरदस्त ज़ियाफ़त करेगा। वहाँ सब मै का मज़ा लूटेंगे, मगर नशा नहीं चढ़ेगा। किसी को नुक़सान नहीं पहुँचेगा।

► **क्यों?**

उस वक़्त दुनिया की टूटी-फूटी हालत बहाल हो जाएगी। इनसानो-हैवान में जो नुक़्स है वह उस वक़्त कहीं नहीं पाया जाएगा। मै भी इनसान को नुक़सान नहीं पहुँचाएगी।

मरियम बीबी का मक़सद

मरियम बीबी जब कहती है कि मै नहीं है तो वह इस तरफ़ इशारा कर रही है। वह समझती है कि अब अच्छा मौक़ा है कि लोग मोजिज़ा देखकर मान जाएँ कि आप अल-मसीह हैं। वही जिससे नजात का यह ज़माना शुरू हो जाएगा।

लेकिन ईसा मसीह कुछ सख़्ती से फ़रमाता है, "ऐ ख़ातून, मेरा आपसे क्या वास्ता? मेरा वक़्त अभी नहीं आया।"

► **इसका क्या मतलब है कि मेरा वक़्त अभी नहीं आया?**

ईसा मसीह ज़रूर ज़ाहिर करेगा कि वह अल-मसीह है। लेकिन अब नहीं। पहले उसे बहुत कुछ करना है। आख़िर में वह हमारी सज़ा अपने ऊपर उठाकर मर जाएगा और तीसरे दिन जी उठेगा।

जो कुछ वह तुमको बताए

► **क्या मरियम बीबी नाराज़ हो जाती है? क्या वह मायूस हो जाती है?**

नहीं। वह नौकरों को बताती है, "जो कुछ वह तुमको बताए वह करो।" वह उन्हें नहीं बताती कि क्या करना है। वह कहती है कि जो कुछ वही तुमको बताए। वह मान जाती है कि मेरा ईसा मसीह पर कोई इख़्तियार, कोई क़ब्ज़ा नहीं है। उसी की मरज़ी पूरी हो जाए। जो भी वह चाहे हो जाए। साथ साथ वह जानती है कि ईसा मसीह हमेशा हमारी सुनता है। शायद वह वह कुछ नहीं करेगा जो हम चाहते हैं। लेकिन वह कुछ करेगा ज़रूर। इसलिए मरियम बीबी नौकरों से बात करती है।

वहाँ पानी के 6 बड़े बड़े मटके पड़े थे। यह पानी वुज़ू के लिए इस्तेमाल होता था। पत्थर के यह मटके काफ़ी बड़े थे। हर एक में तक़रीबन 100 लिटर की गुंजाइश थी। अब ईसा मसीह ने फ़रमाया, "मटकों को पानी से भर दो।" नौकरों ने ऐसा ही करके उन्हें लबालब भर दिया।

फिर मसीह ने फ़रमाया, "अब कुछ निकालकर ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले के पास ले जाओ।"

► **क्या? पानी निकालकर इंतज़ाम चलानेवाले के पास ले जाना? क्यों? क्या वह उन्हें पागल नहीं ठहराएगा?**

ज़रूर। लेकिन ईसा मसीह से एक ऐसा इख़्तियार टपक रहा था कि वह मान गए। वह पानी निकालकर ज़ियाफ़त चलानेवाले के पास ले गए।

► **अब क्या हुआ?**

पानी को चखते ही वह खीज गया। बोला, “हर मेज़बान पहले अच्छी क़िस्म की मै पीने के लिए पेश करता है। फिर जब लोगों को नशा चढ़ने लगे तो वह दो नंबर की मै पिलाने लगता है। लेकिन आपने अच्छी मै अब तक रख छोड़ी है।”

पानी बेहतरीन मै में बदल गया था।

हम कह चुके थे कि मै पानी से मिलाई जाती थी। इसलिए शादी मनानेवाले इतनी जल्दी से नशे में नहीं आ सकते थे। इंतज़ाम चलानेवाले का मतलब यह नहीं था कि सब लोग नशे में धुत हैं। वह कहना चाहता है कि लोग जी भरकर खा-पी चुके हैं, और इस वक़्त बेहतरीन मै पेश करना बेकार है।

शरीअत का पानी या मसीह की इलाही शरबत?

► **पानी के यह बड़े मटके किस काम के लिए इस्तेमाल होते थे?**

यह दीनी ग़ुस्ल यानी वुज़ू के लिए इस्तेमाल होते थे।

► **इससे कलाम हमें क्या बताना चाहता है?**

वुज़ू तौरेत का एक निशान है। इस पानी से इनसान अपने आपको ख़ुदा की नज़र में मंज़ूर करने की कोशिश करता है। मगर अब यह पानी बदल गया था। वह एक ख़ुशी और ताक़त दिलानेवाली शरबत में बदल गया था। यह उस आबे-हयात की तरफ़ इशारा है जो सिर्फ़ अल-मसीह से मिलता है। जिसे पीकर इनसान अबदी ज़िंदगी पाता है।

यही है शरीअत और इंजील में फ़रक़।

इनसान पानी यानी अपनी कोशिशों से मंज़ूर नहीं हो सकता। जितनी भी जिद्दो-जहद वह करे वह अपने गुनाहों को छोड़ नहीं सकता। सिर्फ़ एक उसे मंज़ूर करा सकता है यानी अल-मसीह। इसका निशान यह इलाही शरबत है। जो इसका मज़ा ले वह आख़िरी ज़ियाफ़त में शामिल होगा, वह ख़ुदा का फ़रज़ंद कहलाएगा।

शरीअत ख़राब नहीं है। वह इनसान को बताती है कि उसे क्या करना और क्या छोड़ना है। कि किस तरह राहे-मुस्तक़ीम पर चलना है। वह गुनाह करने की सज़ाएँ भी फ़रमाती है। शरीअत से हमको पता चलता है कि ख़ुदा की क्या मरज़ी है। और उस पर अमल करने से ख़ुदा हमें बरकत देता है।

शरीअत तो अच्छी है। मसला शरीअत नहीं है बल्कि इनसान। इनसान अपने गुनाहों में जकड़ा रहता है और अपनी कोशिशों से आज़ाद हो ही नहीं सकता। यही वजह है कि अल-मसीह आया। ताकि हमें गुनाहों

से आज़ादी दिलाए। यों ख़ुदा हिज़क़ियेल नबी के वसीले से फ़रमाता है,

> तब मैं तुम्हें नया दिल बख़्शकर तुममें नई रूह डाल दूँगा। मैं तुम्हारा संगीन दिल निकालकर तुम्हें गोश्त-पोस्त का नरम दिल अता करूँगा। क्योंकि मैं अपना ही रूह तुममें डालकर तुम्हें इस क़ाबिल बना दूँगा कि तुम मेरी हिदायात की पैरवी और मेरे अहकाम पर ध्यान से अमल कर सको। (हिज़क़ियेल 36:26-27)

जब मसीह इनसान के दिल में बसता है तो उसका पथरीला दिल नरम हो जाता है और वह तबदील होने लगता है। तब वह इस दुनिया में रहते हुए भी इलाही शरबत का मज़ा ले लेकर ख़ुशियाँ मनाने लगता है।

► **क्या आप ख़ुशी और ताक़त दिलानेवाली इस शरबत का मज़ा ले चुके हैं?**

इंजील, यूहन्ना 2:1-12

तीसरे दिन गलील के गाँव क़ाना में एक शादी हुई। ईसा की माँ वहाँ थी और ईसा और उसके शागिर्दों को भी दावत दी गई थी। मै ख़त्म हो गई तो ईसा की माँ ने उससे कहा, "उनके पास मै नहीं रही।"

ईसा ने जवाब दिया, "ऐ ख़ातून, मेरा आपसे क्या वास्ता? मेरा वक़्त अभी नहीं आया।"

लेकिन उसकी माँ ने नौकरों को बताया, “जो कुछ वह तुमको बताए वह करो।” वहाँ पत्थर के छः मटके पड़े थे जिन्हें यहूदी दीनी ग़ुस्ल के लिए इस्तेमाल करते थे। हर एक में तक़रीबन 100 लिटर की गुंजाइश थी। ईसा ने नौकरों से कहा, “मटकों को पानी से भर दो।” चुनाँचे उन्होंने उन्हें लबालब भर दिया। फिर उसने कहा, “अब कुछ निकालकर ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले के पास ले जाओ।” उन्होंने ऐसा ही किया। ज्योंही ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले ने वह पानी चखा जो मै में बदल गया था तो उसने दूल्हे को बुलाया। (उसे मालूम न था कि यह कहाँ से आई है, अगरचे उन नौकरों को पता था जो उसे निकालकर लाए थे।) उसने कहा, “हर मेज़बान पहले अच्छी क़िस्म की मै पीने के लिए पेश करता है। फिर जब लोगों को नशा चढ़ने लगे तो वह निसबतन घटिया क़िस्म की मै पिलाने लगता है। लेकिन आपने अच्छी मै अब तक रख छोड़ी है।”

यों ईसा ने गलील के क़ाना में यह पहला इलाही निशान दिखाकर अपने जलाल का इज़हार किया। यह देखकर उसके शागिर्द उस पर ईमान लाए।

इसके बाद वह अपनी माँ, अपने भाइयों और अपने शागिर्दों के साथ कफ़र्नहूम को चला गया। वहाँ वह थोड़े दिन रहे।